अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

अणुव्रत

ई-संस्करण
वर्ष : 2, अंक : 1
मई 2024

लोकतंत्र, व्रत और अणुव्रत

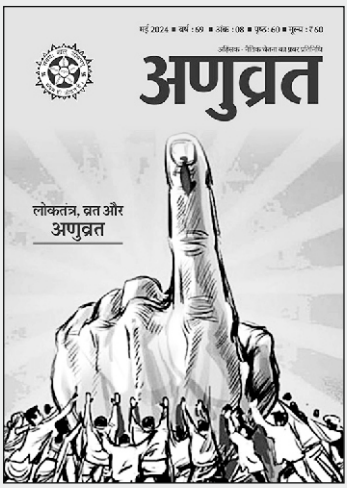

वर्ष: 69 अंक: 8

मई 2024

संपादक
संचय जैन

सह संपादक
मोहन मंगलम

चित्रांकन
मनोज त्रिवेदी

पेज सेटिंग
मनीष सोनी

ई-संस्करण
विवेक अग्रवाल

ई-मैगज़ीन संयोजक
मनोज सिंघवी

पत्रिका प्रसार संयोजक
सुरेन्द्र नाहटा

अणुव्रत आंदोलन असाम्प्रदायिक और सार्वभौम है। यह चाहे जिस नाम से चले, हमें काम से मतलब है और इसका नामकरण चाहे जो भी कर दिया जाये, लाभ वही होगा। इसलिए अपेक्षा यह है कि आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्रवर्तित नैतिक अभ्युत्थान के इस तथ्य को समझ, परख और सीखकर जीवन में अनुसरण करें।

- लोकनायक जयप्रकाश नारायण

अध्यक्ष : **अविनाश नाहर**
महामंत्री : **भीखम सुराणा**
कोषाध्यक्ष : **राकेश बरड़िया**

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 2
दूरभाष : 011-23233345
मोबाइल : 9116634512

www.anuvibha.org
anuvrat.patrika@anuvibha.org

राजनीति : नीति और अनीति की भूलभुलैया

शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जो यह कह सके कि वह राजनीति से पूर्णतः अछूता है। कभी प्रत्यक्ष तो कभी परोक्ष रूप से राजनीति हमारी चिंतनधारा को और हमारी जीवनशैली को भी प्रभावित करती है। इस प्रभाव से हम कितने भिज्ञ हैं और कितने अनभिज्ञ – यह आत्मचिंतन की बात हो सकती है! राजनीति जनसेवा का एक बड़ा माध्यम है। प्रश्न बस इतना है कि राजनीति में निहित हो गये नीति और अनीति के भेद को हम कितना समझ पा रहे हैं!

चुनाव प्रक्रिया को लोकतंत्र की आत्मा कहा जाता है। लेकिन यह एक अर्द्ध सत्य है जिसे राजनीतिक निहितार्थ के चलते बार-बार दोहरा कर जनता को दो चुनावों के मध्यकाल में गहरी नींद में चले जाने को प्रेरित किया जाता है। वास्तविकता यह है कि चुनाव से अधिक महत्वपूर्ण है दो चुनावों के बीच इस बात पर नजर रखना कि जिन्हें हमने शासन की बागडोर सौंपी है, वे लोकतंत्र के प्रहरी हैं या नहीं! जिस देश ने यह जागरुकता खो दी, उसे रूस, चीन या दक्षिण कोरिया में तब्दील होने से कोई नहीं रोक सकता, जहाँ चुनाव तो होते हैं लेकिन लोकतंत्र से उनका दूर-दूर का वास्ता नहीं।

एक जीवन्त प्रगतिशील राष्ट्र के लिए जागरूक नागरिक ही एकमात्र शर्त है। अन्यथा आज एक दल तो कल दूसरा, आज एक नेता तो कल दूसरा, इसी प्रकार जनता के जज्बात के साथ खेलता रहेगा और हमें पता भी नहीं चलेगा कि एक खोखले लोकतंत्र पर गर्व करते-करते हम कब उसकी शवयात्रा में शामिल हो गये हैं।

– संचय जैन
sanchay_avb@yahoo.com

लोकतंत्र और अणुव्रत

■ आचार्य महाप्रज्ञ

यौगलिक युग से लेकर आज तक शासन की अनेक प्रणालियां सामने आयीं। सबसे पहले कुल की व्यवस्था आयी और कुल को शासित करने वाला एक कुलकर। कुलकर की व्यवस्था चली, फिर राजतंत्र आया। राजतंत्र के भी अनेक रूप आये। सबसे अंत में शासन का निखरा हुआ रूप आया लोकतंत्र।

लोकतंत्र भी परिपूर्ण पद्धति है, यह नहीं कहा जा सकता। उसमें भी काफी खामियां हैं, कमियां हैं, सुधार के लिए काफी अवकाश है, फिर भी आज तक शासन की जितनी प्रणालियां आयीं, उन सबमें यह श्रेष्ठ प्रणाली है – यह कहने में संकोच नहीं होता।

लोकतंत्र और अणुव्रत का संबंध क्या है? दोनों में मेल क्या है? एक है अध्यात्म का प्रकाश, दूसरा है शासन का एक तंत्र, दूसरों को शासित करने की एक विधि। जब सापेक्ष दृष्टि से मीमांसा करते हैं, तब यह कहने में भी संकोच नहीं होना चाहिए कि लोकतंत्र और अणुव्रत में गहरा संबंध भी है।

लोकतंत्र की परिभाषा

लोकतंत्र की परिभाषा क्या है? अमेरिकी राष्ट्रपति ने लोकतंत्र की एक परिभाषा की थी – ''जनता का शासन, जनता के लिए और जनता के द्वारा।'' अणुव्रत की परिभाषा क्या है? अपना शासन, अपने लिए और अपने द्वारा – अपने से अपना अनुशासन अणुव्रत की परिभाषा। ऐसा लगता है कि जनता के स्थान पर अपना शब्द जोड़ दिया और अपना के स्थान पर जनता शब्द बिठा दिया।

अणुव्रत की परिभाषा क्या है ? अपना शासन, अपने लिए और अपने द्वारा।

'जनता' शब्द को बिठाओ तो लोकतंत्र की परिभाषा बन जाएगी और 'अपना' शब्द को बिठाओ तो अणुव्रत की परिभाषा बन जाएगी। दोनों की परिभाषा में कितना गहरा संबंध है।

जहाँ आत्मानुशासन नहीं होता, वहाँ अणुव्रत नहीं होता। जहाँ अपना शासन नहीं होता, वहाँ सफल लोकतंत्र नहीं होता। लोकतंत्र की सफलता का आधार है आत्मानुशासन। जिस राष्ट्र की जनता आत्मानुशासी होती है, अपने आप पर नियंत्रण रखना जानती है, वहाँ सफल लोकतंत्र होता है और जहाँ ऐसा नहीं होता, वहाँ लोकतंत्र दंड-तंत्र के रूप में बदल जाता है। लोकतंत्र में गोलियां चलें, पुलिस का शासन चले, अश्रु गैस छोड़ी जाये, जनता को दंडों से हांका जाये या कारावास में डाला जाये - बड़ी अजीब-सी बात लगती है। यह कैसा लोकतंत्र ?

लोकतंत्र का नागरिक तो इतना अनुशासित और प्रशिक्षित होना चाहिए कि वह स्वयं अपने आप पर नियंत्रण करे। अगर लोकतंत्र में ऐसा नहीं हो तो उसे तानाशाही, अधिनायकवाद या पुलिस राज्य का दूसरा पर्याय मानना चाहिए। या यह मानना चाहिए कि लोकतंत्र का नागरिक अपना अधिकार पाने में अपनी अर्हता को प्रकट नहीं कर रहा है, अपने आपको उपयुक्त प्रमाणित नहीं कर रहा है। अवश्य कहीं न कहीं कमी है। लोकतंत्र में विरोध करना तो स्वाभाविक हो सकता है, पर तोड़-फोड़ करना, हिंसा करना कहाँ तक सार्थक हो सकता है।

लोकतंत्र और व्रत

लोकतंत्र और व्रतों में गहरा संबंध है। अणुव्रतों को छोड़कर हम लोकतंत्र की सुंदर कल्पना नहीं कर सकते और लोकतंत्र के बिना अणुव्रत की कल्पना करना भी कठिन है। अणुव्रत की सफलता लोकतंत्र में अधिक संभावित है। ऐसा लगता है कि लोकतंत्र के साथ अणुव्रत तो आ गया, पर उसके साथ व्रतों का जो प्रशिक्षण होना चाहिए, वह नहीं हो सका है। लोकतंत्र के प्रशिक्षण का अर्थ है अणुव्रतों का प्रशिक्षण। अगर लोकतंत्र के साथ-साथ अणुव्रतों का प्रशिक्षण होता तो आज अधिक सफलता मिलती। ऐसा हुआ नहीं। अगर जीवन में व्रत आता है, संयम आता है तो सफलता अपने आप आती है। बहुत लोग सफलता तो चाहते हैं, किंतु जीवन में व्रतों को नहीं चाहते। वे इस सच्चाई को भूल जाते हैं कि संयम, व्रत और आत्मानुशासन के बिना जीवन में कभी सफलता नहीं मिलती।

यदि लोकतंत्र के नागरिक अणुव्रतों को स्वीकार करते हैं तो वे लोकतंत्र को सफल बनाते हैं।

किसी भी राष्ट्र को, किसी भी समाज को या किसी भी व्यक्ति को सफलता मिली है तो उसका रहस्य यही है कि उसने अपने आपको संवारा है, अपने आपको संयत किया है, अपने आपको व्रती बनाया है। अणुव्रतों का मूल्य स्पष्ट है। यदि लोकतंत्र के नागरिक अणुव्रतों को स्वीकार करते हैं तो वे लोकतंत्र को सफल बनाते हैं। लोकतंत्र की सफलता की शर्त है - व्रतों का पालन, आत्मानुशासन का विकास।

किसे चुनेंगे आप?

आप स्वयं सोचें इस संदर्भ में कि मैं लोकतंत्र और अणुव्रत दोनों के संबंध की व्याख्या करूं या न करूं। स्वाभाविक है कि यदि मुझे अणुव्रत की बात कहनी है तो लोकतंत्र की

बात कहनी होगी और यदि लोकतंत्र की बात कहनी है तो अणुव्रत की बात कहनी होगी। दोनों में आपसी संबंध है और गहरा संबंध है। यद्यपि बहुत सारे लोग अणुव्रतों का मूल्य नहीं आँक रहे हैं, इसीलिए भ्रष्टाचार पनप रहा है। जहाँ एक ओर शिकायत है, वहाँ दूसरी ओर अणुव्रत का अस्वीकार है। अगर आप अणुव्रत को नहीं चाहते हैं तो फिर भ्रष्टाचार को क्यों न पसंद करें? आपको क्या कठिनाई है? आप यह मान लें कि यह तो हमारी स्वाभाविक प्रक्रिया है। यह चला है, चलता आया है और चलता रहेगा। कभी इसे रोका नहीं जा सकेगा। यदि आपको भ्रष्टाचार पसंद नहीं है तो अणुव्रत का रास्ता अपनाना पड़ेगा, नैतिकता का रास्ता अपनाना पड़ेगा, सदाचार का रास्ता अपनाना पड़ेगा। दोनों में से आप एक चुन सकते हैं, दोनों को आप एक साथ नहीं अपना सकते। यह निर्णय करें तो मैं मानता हूँ कि लोकतंत्र और अणुव्रत का सह-अस्तित्व है। अच्छा लोकतंत्र, इसका मतलब अणुव्रत की अनिवार्यता। जहाँ अणुव्रत की अनिवार्यता है, वहाँ अच्छा लोकतंत्र अपने आप होगा।

1949 से शुरू हुए अणुव्रत आंदोलन के 75 वर्ष की यात्रा पर एक रोचक एवं ज्ञानवर्धक वृत्तचित्र फिल्म देखने के लिए वीडियो पर क्लिक करें...

अणुविभा
संयमः खलु जीवनम्
संयम ही जीवन है।
नई पीढ़ी में रचनात्मकता और सकारात्मकता
को प्रोत्साहित करने का राष्ट्रव्यापी अभियान
ANUVRAT
CREATIVITY
CONTEST
2024
अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट - 2024
मुख्य विषय
व्यक्तित्व निर्माण से
राष्ट्र निर्माण
प्रतियोगिताएं
चित्रकला
गायन (एकल)
भाषण
निबंध
गायन (समूह)
कविता
राष्ट्रीय विजेताओं को
आकर्षक पुरस्कार
स्तर-1 : कक्षा 3-8
स्तर-2 : कक्षा 9-12
सहभागिता
15+ राज्य
200+ शहर/कस्बे
1+ लाख बच्चे
अधिक जानकारी
के लिए सम्पर्क करें
https://anuvibha.org/acc
acc@anuvibha.org
+91-91166-34514
+91-91166-34517
आयोजक
अणुव्रत
विश्व भारती
सोसायटी

धर्म और राजनीति का उभयपक्षी सम्बन्ध

डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, जयपुर

धर्म और राजनीति का अन्तर्सम्बन्ध अत्यन्त ही महत्वपूर्ण विषय है क्योंकि यह सामाजिक ताने-बाने पर गहरा प्रभाव छोड़ता है। विद्वज्जन का कहना है कि धर्म का अर्थ है जो धारण किया जाये। धर्म सामान्य रूप से पदार्थ मात्र का वह प्राकृतिक तथा मूल गुण है, जो उसमें शाश्वत रूप से विद्यमान रहता है। सरल शब्दों में कहें तो ईश्वरीय श्रद्धा व पूजा-पाठ, ईश्वरीय उपासना, आराधना आदि को धर्म कह सकते हैं। महाकवि तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' में कहा है -

परहित सरिस धर्म नहीं भाई।
परपीड़ा सम नहीं अधमाई।।

मुझे धर्म की यह सबसे अधिक स्वीकार्य और तर्कपूर्ण परिभाषा लगती है।

अब राजनीति की बात भी कर लें। राजनीति अर्थात् राज्य करने या उसका संचालन करने की नीति। इसमें 'नीति' विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है। यहाँ केवल नीति की बात है, अनीति की नहीं। वर्तमान राजनीति की चर्चा करते हुए इस बात का ध्यान रखना बहुत आवश्यक होगा। राजनीति का संचालन वह सोच करे जो सब के कल्याण की बात सोचता हो।

आज धर्म का अर्थ वह नहीं रहा जो तुलसीदास हमें सुझा रहे थे या जो हमारे शास्त्रों में बताया गया है। आज धर्म का अर्थ स्नेह-सद्भाव और करुणा के बजाय कटुता-घृणा और हिंसा हो गया है। मैं अपने धर्म से प्यार करता हूँ,

इसका और बड़ा अर्थ यह हो गया है कि मैं औरों के धर्म से नफरत करता हूँ।

विभिन्न तथाकथित धार्मिक संगठन अपने-अपने देवताओं की स्नेहिल और वत्सल छवि को हटाकर उनकी उग्र और आक्रामक छवि स्थापित करने में जुटे हैं। उनके अनुयायी भी उसी तरह हथियार लहराते और डराते-आतंकित करते नजर आने लगे हैं।

और ऐसा ही कुछ राजनीति के मामले में भी हुआ है। आज राजनीति का अर्थ बदल कर यह हो गया है कि सत्ता पर कैसे काबिज हुआ जाये, कैसे उस पर चिपका रहा जाये तथा कैसे उसका अधिक से अधिक दोहन किया जाये। नीति यहाँ सिरे से गायब है।

तो जब धर्म और राजनीति दोनों के अर्थ ही बदल गये हैं तो यह बहुत मुश्किल हो गया है कि उनके पारस्परिक रिश्तों की बात की जाये! अब तो असल में दोनों एक-दूसरे का इस्तेमाल कर रहे हैं और यह इस्तेमाल किसी व्यापक कल्याण की भावना से प्रेरित नहीं है। यहाँ दोनों एक-दूसरे का अपने-अपने हित और स्वार्थ में उपयोग कर रहे हैं। आज धर्म और राजनीति का बहुत मजबूत गठजोड़ देखने को मिल रहा है, लेकिन यह गठजोड़ स्वागत योग्य नहीं है। इसलिए नहीं है कि इसमें जन कल्याण का सोच सिरे से नदारद है।

असल में धर्म बहुत निजी और वैयक्तिक मामला है, लेकिन राजनीति के अपवित्र गठजोड़ ने उसे प्रदर्शन और दबाव बनाने का पर्याय बनाकर रख दिया है। अधिकांश जो लोग धर्म के शीर्ष पर हैं या स्वयं को उसका नियंत्रक मानते हैं, उन्हें इस बात से तनिक भी आपत्ति नहीं है। बल्कि वे राजनीति का सहयोग पाकर अपने वर्चस्व को बढ़ा हुआ देख मगन हैं। और ऐसा ही राजनीति की दुनिया में भी हो रहा है। जब हालात इतने विकट हों तो यही कहा जा सकता है कि धर्म और राजनीति का ऐसा गठजोड़ तनिक भी उचित नहीं है।

काव्य-रस

परहित की हो कामना..

■ राजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव, विदिशा ■

सहज-भाव सह लीजिए, दुःख पीड़ा अपमान।
यही आत्म-उत्कर्ष के, बनते हैं सोपान।।

परिचित या अनजान हो, दाता हो या दीन।
सबसे सम व्यवहार हो, सौम्य सहज शालीन।।

नीति-रीति की बात को, कहिए सीना तान।
पक्षपात से दूर ही, रहते चतुर सुजान।।

दिन को दिन कह दीजिए, और रात को रात।
हित-अनहित मत सोचिए, कहिए सच्ची बात।।

जीवन के मैदान में, हार मिले या जीत।
होठों पर मुस्कान हो, मन में सच्ची प्रीत।।

मन में मत पालें कभी, लेशमात्र अभिमान।
सहज भाव से बाँटिए, नेह और मुस्कान।।

नियमित पाठन-पठन का, जिनको है अभ्यास।
उनका ही जीवन सफल, होता लिये सुवास।।

जिसमें नहीं सुंगध हो, उसे कहें क्यों 'इत्र'।
विपदा में जो छोड़ दे, उसे कहो मत 'मित्र'।।

मानवता का मान्यवर, जान लीजिए मर्म।
परहित से बढ़कर नहीं, दूजा कोई धर्म।।

परहित की हो कामना, हरें परायी पीर।
यश-परिमल स्वयमेव ही, बिखरे चारों तीर।।

दिनेश प्रताप सिंह 'चित्रेश', सुल्तानपुर

शिवनारायण एक साहित्यिक कार्यक्रम में शिमला आये थे। कड़ाके की ठंड देखते हुए उन्होंने अपने कंबल के ऊपर गेस्ट हाउस की रजाई भी खींच ली थी। फिर तो मिनटों में ऐसी गर्माहट आ गयी कि आँखें मूँदने लगीं...मगर तभी मोबाइल बज उठा। पत्नी का फोन था। झल्लाहट के साथ पूछा, ''अब क्या हो गया? अभी शाम को तो बात हुई थी।''

''हाँ, तब याद नहीं पड़ा। आज रमाकांत की बरखी है। उनके बेटे नृपेन्द्र ने पहली बार कोई आयोजन किया है, मगर संयोग देखो कि आज अपने चारों घर में कोई उनके यहाँ जाने वाला ही नहीं है!'' पत्नी ने बताया।

''नहीं है तो न सही। सुबह नृपेन्द्र से बात करके मैं स्थिति स्पष्ट कर दूँगा।''

उन्होंने फोन काट दिया और दोबारा सोने के लिए आँखें मूँद तो लीं, लेकिन आँखों में पुराने दिनों की छवियाँ उमड़ने-घुमड़ने लगीं...रमाकांत उनके ही मोहल्ले का था। शिवनारायण उससे एक साल बड़े थे, पर दोनों साथ पढ़ते थे। उन दिनों वे लोग गरीब थे, जबकि शिवनारायण का परिवार खुशहाल था।

तीन साल पहले रमाकांत गंभीर बीमारी की चपेट में आ गया था। इसके बाद शिवनारायण उनके यहाँ कुछ अधिक ही जाने लगे थे। उन्होंने अकुलाहट के साथ करवट बदली। सारे विचारों को झटककर आँखें मूँद लीं, किन्तु पता नहीं कैसे उसका मन उस प्रकरण से जुड़ गया...। रमाकांत उन दिनों रिटायर होकर गाँव में रहने लगा था। उस रोज शिवनारायण घर के सामने गुमसुम-सा खड़ा था। रमाकांत ने कार रोक दी थी। ''नमस्ते भाई, क्या बात है?''

''नमस्कार, कुछ खास नहीं। वैसे ही...आप कहाँ...?'' शिवनारायण ने पूछा।

''ससुराल के लिए निकला हूँ।''

''पाँच मिनट रुको तो कपड़ा बदल कर आ जाऊँ। मुझे चौराहे पर छोड़ देना। कोई दिक्कत तो नहीं!'' उसने रमाकांत की तरफ देखा।

''आ जाओ। चौराहे तक एक बुद्धिजीवी का साथ मिल जाएगा।'' रमाकांत ने जवाब दिया।

दस मिनट बाद वे आकर कार में बैठ गये। गाड़ी थोड़ी दूर चली थी कि रमाकांत ने पूछा,''आप तो पढ़ने-लिखने वाले व्यक्ति हो। जिन्दगी में सबसे महत्वपूर्ण क्या होता है?''

शिवनारायण का मन सुबह से ही भारी था। वे इस सवाल पर तल्ख हो उठे,''जीवन में सबसे बड़ा भाग्य होता है, जिसकी आप मिसाल हैं।'' शिवनारायण ने अपनी कुंठा उगलते हुए पूरा इतिहास उधेड़ कर रख दिया था।

नींद के लिए बेचैन शिवनारायण इस घटना की स्मृति से बेहद आहत हो उठे। मोबाइल में समय देखा। बारह बजने वाले थे। एक बार फिर पुरानी यादों में डूबते-उतराते रहे।

रमाकांत शुरू में मिचमिची आँखों वाला रोगी जैसा कमजोर लड़का था, जबकि शिवनारायण स्वस्थ और चटक थे। कक्षा पाँच का रिजल्ट आया तो पाँच मेधावी बच्चों की लिस्ट में वे तीसरे नम्बर पर थे, जबकि रमाकांत साधारण नम्बरों से पास हुआ था। दसवीं में वे छप्पन

प्रतिशत के साथ पास हुए और रमाकांत तीन नम्बर कृपांक के साथ प्रोन्नत हो पाया था।

इसके बाद एक टर्निंग प्वाइंट आया। रमाकांत की शादी हो गयी। पत्नी नयी-नयी मास्टरनी लगी थी और सम्पन्न परिवार से थी, जबकि शिवनारायण के परिवार में एक-एक कर दुश्वारियां आती गयीं।

बड़ी मुश्किल से इंटरमीडिएट तक उनकी शिक्षा हो पायी थी। इस परीक्षा में भी उनके अंक रमाकांत से अच्छे थे। अच्छी मेरिट की वजह से बीटीसी की ट्रेनिंग में उनका चयन हुआ और वे मास्टर हो गये।

उधर, रमाकांत की पढ़ाई जारी रही। उसने पढ़ाई में मेहनत की और एमएससी एजी में कॉलेज का टॉपर रहा। इस आखिरी रिजल्ट की धमक ऐसी थी कि जिस पद के लिए भी आवेदन किया, वहीं से बुलावा पत्र आया। अंततः उसने बीडीओ का मलाईदार पद ज्वाइन किया। उसके बच्चे भी पढ़ाई-लिखाई में ठीक निकले। एक ही लड़का नृपेन्द्र है। उसने एमबीए किया था। आज वह सफल बिजनेसमैन है। एक लड़की ने बीटेक किया था। रमाकांत ने एक सम्पन्न परिवार के इंजीनियर लड़के से उसकी शादी कर दी। दूसरी लड़की एमएड थी, वह ससुराल में अपना स्कूल सम्भालती है। रमाकांत जिला विकास अधिकारी के पद से रिटायर हुआ था। चेहरे पर रहने वाली सदाबहार प्रसन्नता और आत्मविश्वास से भरा उसका व्यक्तित्व गरिमामय प्रतीत होता था।

शिवनारायण इस बीच चेहरे से कुंठित लगने लगे। बात-बात में चिढ़ जाना उनका स्वभाव बन गया। यही कारण था, जिससे वे रमाकांत के सीधे-से सवाल पर अंट-शंट बोल गये थे। बाद में जब रमाकांत की बीमारी का पता चला तो वे अपराधबोध से भर उठे थे...और फिर पन्द्रह-बीस दिन में उससे मिलने जाने लगे थे...।

इन्हीं बातों में उलझे हुए शिवनारायण पता नहीं कब नींद के आगोश में चले गये...। सुबह जागे तो साढ़े सात बज रहे

थे। नहाने और तैयार होने के बाद बाहर आये तो गेस्ट हाउस का मौन इंगित कर रहा था कि लोग कार्यक्रम स्थल की तरफ जा चुके हैं।

आज शिवनारायण का सम्मान होना था। वे धूप में बैठे नयी उम्र के कवि निर्मल कुमार के पास पहुँच गये। बोले- ''निर्मल जी, मेरे सम्मानित होने के अवसर की कुछ फोटो लेनी होंगी। क्या आप?''

''बिल्कुल सर, मुझे खुशी होगी।''

सम्मान समारोह के बाद शिवनारायण ने निर्मल से सारे स्नैप अपने मोबाइल में तो लिये ही, लगे हाथों नृपेन्द्र का नम्बर देखकर उसे भी व्हाट्सएप कर दिये। निर्मल के जाने पर शिवनारायण ने नृपेन्द्र को फोन लगाया। दो-तीन रिंग के बाद फोन उठ गया-''बाबूजी प्रणाम!''

''खुश रहो बेटा।'' आशीर्वाद के बाद वे रमाकांत की बरखी में शामिल न हो पाने की बात करने वाले थे, तभी नृपेन्द्र कहने लगा-''बाबूजी, आपके सम्मानित होने की फोटोज अभी मेरे व्हाट्सएप पर आयी हैं। आप इस उम्र में दूर-दराज के इलाके के कार्यक्रमों में सम्मानित होते हैं। जिले और गाँव का नाम रोशन कर रहे हैं। कितने भाग्यवान हैं आप! बधाई और शुभकामनाएं!'' शिवनारायण एक बार तो स्तब्ध रह गये...फिर धीरे-धीरे उनके मन में खुशियों भरा एक एहसास जगमगाने लगा - ''नृपेन्द्र ने सच कहा, वास्तव में मैं भाग्यवान हूँ।''

नजरिया और नजारे

इंजी. आशा शर्मा, बीकानेर

रामप्रसाद को वृद्धाश्रम में जाते देखा तो जगजीवन का कलेजा मुँह को आ गया, लेकिन कुछ सोचकर रुक गया। वह दोस्त को शर्मिंदा नहीं करना चाहता था। झिझकते हुए फोन लगाया तो रामप्रसाद का चहकता हुआ 'हेलो' सुनकर चौंक गया।

''क्या बात है, बहुत खुश लग रहे हो? कोई लॉटरी लगी है क्या?'' जगजीवन ने पूछा। वह वृद्धाश्रम वाली बात जान-बूझकर टाल गया।

''लॉटरी ही समझो।'' रामप्रसाद ने बात को घुमाते हुए कहा।

''ऐसा क्या हुआ है?'' जगजीवन ने उसे कुरेदा।

''दो महीने पहले किसी काम से वृद्धाश्रम में आया था। देखा तो यहाँ सब लोग बुझे-बुझे से थे। अपनों से दूर जो थे। तो बस! मैं भी यहाँ आ गया। प्रयोग बहुत सफल रहा और आज इस वृद्धाश्रम में ठहाके गूँजते हैं, जहाँ कभी मनहूसियत पसरी रहती थी।'' राम प्रसाद ने उत्साह से बताया।

''लेकिन तुमने ऐसा किया क्या?'' जगजीवन की जिज्ञासा चरम पर थी।

''कुछ खास नहीं, बस यही बात सबके दिमाग में बिठाने की कोशिश की कि इसे वृद्धाश्रम नहीं बल्कि कॉलेज का हॉस्टल समझो और वैसे ही जीओ जैसे कॉलेज के दिनों में जिया करते थे - बेफिक्र और बिंदास। कुछ दिन सबको अटपटा लगा लेकिन धीरे-धीरे सब इस थ्योरी को अपना रहे हैं।'' राम प्रसाद ने उत्साह से बताया।

''सही कहा तुमने। नजरिया बदलते ही नजारे भी बदल जाते हैं दोस्त।'' जगजीवन ने कहा।

अणुव्रत आंदोलन

चुनाव शुद्धि अभियान

सही चयन

राष्ट्र का सही निर्माण

I Vote For A Strong India

आपके अमूल्य वोट का अधिकारी कौन?

- जो ईमानदार हो
- जो चरित्रवान हो
- जो सेवाभावी हो
- जो कार्यनिपुण हो
- जो नशामुक्त हो
- जो स्वच्छ छवियुक्त हो
- जो राष्ट्रहित व लोकहित को सर्वोपरि मानता हो
- जो जाति-सम्प्रदाय से बंधा हुआ न हो

मतदाता ध्यान दें...

- भय और प्रलोभन में मतदान न करें।
- मद्य एवं मादक द्रव्यों का प्रतिकार करें।
- चरित्र एवं गुणों के आधार पर मतदान का निर्णय करें।
- जाति एवं सम्प्रदाय के आधार पर मतदान न करें।
- अपराधी एवं भ्रष्टाचार में लिप्त उम्मीदवार को मतदान न करें।
- हिंसात्मक प्रवृत्तियों में लिप्त उम्मीदवार को मतदान न करें।
- अवैध मतदान न करें।

मतदान अवश्य करें, राष्ट्रीय कर्त्तव्य का निर्वहन करें

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती

राष्ट्रहित में प्रसारित

www.anuvibha.org

अणुव्रत अमृत विशेषांक

पाठक परख

अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्षों की सफल सम्पूर्ति पर वर्ष पर्यन्त मनाये गये 'अणुव्रत अमृत महोत्सव' के क्रम में वैविध्यपूर्ण प्रकल्पों की एक वृहद् शृंखला आयोजित हुई। इस शृंखला की अंतिम कड़ी के रूप में प्रस्तुत हुआ - 'अणुव्रत अमृत विशेषांक'। विशेषांक के सन्दर्भ में अत्यल्प समय में ही हमें कुछ संदेश प्राप्त हुए हैं, हृदय से आभार!

मूल्यवती मननीय उदात्त सुचिन्त्य सामग्री

अणुव्रत आंदोलन के अणुव्रत अमृत महोत्सव पर केन्द्रित 'अणुव्रत अमृत विशेषांक' एक महत्वपूर्ण प्रकाशन है। नौ खंडों में सुविन्यस्त पाठ्यसामग्री के माध्यम से इसमें अणुव्रत की ऐतिहासिक विकास-यात्रा से परिचय कराया गया है। इसके साथ ही अणुव्रत आंदोलन के 75 वर्षों का जीवंत इतिहास प्रस्तुत किया गया है।

अणुव्रत के दर्शन को तथ्यवार, रोचक और सुग्राह्य शैली में विवेचित किया गया है। अणुव्रत को एक आदर्श जीवनशैली के रूप में पृष्ठ दर पृष्ठ उच्चालोकित करके इस अंक को न केवल पठनीय अपितु संग्रहणीय भी बनाया गया है।

मूल्यवती मननीय उदात्त सुचिन्त्य सामग्री को एक विपुलकाय ग्रंथ में समाहित करना आसान कार्य नहीं था, पर विशेषांक के सुधी सम्पादक संचय जैन और उनकी अणुव्रत-समर्पित टीम ने यह दुष्कर कार्य अपने विवेक और अहर्निशि श्रम से संभव कर दिखाया है। इस हेतु वे सभी साधुवाद के पात्र हैं। **- डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम'**, जयपुर

अणुव्रत दर्शन का संग्रहणीय विशेषांक

आचार्य तुलसी ने चरित्र निर्माण की प्रक्रिया के रूप में अणुव्रत आंदोलन शुरू किया था जिसमें उन्होंने नैतिक उन्नति का आधार नैतिक विचार माना था। 75 वर्ष बाद आज भी यह सामयिक बना हुआ है।

'अणुव्रत' पत्रिका का मार्च-अप्रैल 2024 का अत्यंत सुंदर भारी-भरकम 'अणुव्रत अमृत विशेषांक' हमारे हाथ में है। जब विषय-वस्तु ऊँचे दर्जे की हो और उसी के अनुरूप उसकी साज-सज्जा वाली छपाई हो तो किसी भी पत्रिका के स्वरूप में चार चाँद लगना स्वाभाविक ही है। ऐसा इस पत्रिका के इस विशेषांक के साथ भी हुआ है। लगभग 500 पेजों की पठनीय सामग्री जुटाना आसान काम नहीं है, मगर इसके संपादक संचय जैन ने सह संपादक मोहन मंगलम के साथ मिल कर यह कर दिखाया है।

यह विशेषांक एक प्रकार से अणुव्रत आंदोलन का संदर्भ ग्रंथ बन गया है जो समुदाय के पाठकों से बाहर के अध्येताओं के लिए भी रुचिकर और उपयोगी ऐतिहासिक सामग्री प्रस्तुत करता है। चिंतनपूर्ण, मगर सहज और प्रखर आलेखों ने इसे समृद्ध बनाया है जिससे निश्चय ही अणुव्रत आंदोलन को निरंतरता और गति मिलेगी। – **राजेन्द्र बोड़ा**, जयपुर

अणुव्रत की 75 साल की यात्रा को समर्पित

एक पत्रिका जो पिछले सात दशक से हिंदी साहित्य में एक खास सोच को लेकर निकल रही है, वह है 'अणुव्रत' जो अहिंसक नैतिक चेतना का प्रबल प्रतिनिधित्व करती है। अणुव्रत आंदोलन के 75 वर्ष पूरे होने पर पत्रिका का 500 पृष्ठ का एक विशेष ग्रंथनुमा अंक प्रकाशित किया गया है - 'अणुव्रत अमृत विशेषांक'।

इसके संपादक श्री संचय जैन हैं जिनकी मेहनत से इतनी रंगदार भव्य पत्रिका प्रकाशित हुई है। पत्रिका की डिजाइन, इसमें प्रस्तुत सामग्री तथा साहित्य-संस्कृति के साथ-साथ

अणुव्रत की 75 साल की यात्रा को समर्पित यह ग्रंथनुमा प्रस्तुति मन को छू लेती है। इसके लिए अणुव्रत विश्व भारती के अध्यक्ष श्री अविनाश नाहर तथा संपादक श्री संचय जैन के साथ पूरी टीम बधाई की पात्र है।

– **डॉ. कृष्ण कुमार रत्तू**, जयपुर

शिक्षक की तरह है विशेषांक

अणुव्रत अमृत विशेषांक में अणुव्रत आंदोलन का रोचक इतिहास समाहित है और अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के प्रकल्पों का वर्णन भी है। जिस प्रकार एक अच्छा साहित्य कई अच्छे मित्रों के बराबर होता है, उसी प्रकार यह विशेषांक अणुव्रत दर्शन, अणुव्रत आंदोलन एवं उसकी गतिविधियों को समझने के लिए एक शिक्षक और अणुव्रत प्रचारक की भूमिका निभाएगा। यह विशेषांक हमारे पास होना हमारे लिए गौरव की बात है।

– **अभिषेक कोठारी**, भीलवाड़ा

अणुविभा का महत्वपूर्ण मासिक प्रकाशन

बच्चों का देश
राष्ट्रीय बाल मासिक

नयी पीढ़ी के जीवन को मानवीय मूल्यों से समृद्ध बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत

नवीनतम अंक पढ़ने के लिए
पुस्तक के चिह्न पर क्लिक करें..

अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्ष पूरे होने पर

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

की अनुपम प्रस्तुति

अणुव्रत अमृत विशेषांक 2024

लगभग 500 पृष्ठ के इस
संग्रहणीय विशेषांक में शामिल हैं :

- ☐ अणुव्रत अनुशास्ताओं के पावन प्रेरणा पाथेय
- ☐ अणव्रत दर्शन के सम्बन्ध में चारित्रात्माओं और विद्वानों के विचार
- ☐ अणुव्रत आंदोलन के प्रति समर्पित कार्यकर्ताओं के अनुभव
- ☐ अणुव्रत आंदोलन के 75 वर्षों की 75 विशिष्ट झलकियाँ
- ☐ अणुव्रत अमृत महोत्सव वर्ष की चित्रमय रपट
- ☐ कथा-संसार, काव्य-सुधा तथा और भी पठनीय-मननीय सामग्री

मूल्य : ₹ 200

अणुविभा

विशेषांक मँगवाने के लिए संपर्क करें :

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 2
दूरभाष : 011-23233345 ☐ मोबाइल : 9116634512

राजनीति और धर्म का गठजोड़ : कितना उचित, कितना अनुचित?

फरवरी 2024 अंक में प्रस्तुत परिचर्चा के इस विषय पर पाठकों से प्राप्त चिंतन बिंदु –

राजनीति और धर्म अलग-अलग नहीं हो सकते

राजनीति कभी धर्म से अलग नहीं रही है। एक व्यक्ति जिन आदर्शों को धारण करता है, जिन मूल्यों को जीता है, वही उसका धर्म कहलाता है। त्रेता युग में राम के समय की राजनीति उस समय स्थापित जीवन मूल्यों अर्थात् धर्म के अनुरूप थी। लोगों के जीवन में परमार्थ की प्रधानता थी। सब सुखी थे। कालान्तर में जीवन मूल्यों का ह्रास हुआ। द्वापर युग में कृष्ण के काल में स्वार्थ प्रबल हो गया। तदनुरूप राजनीति का रंग भी बदल गया। स्वार्थी लोगों के समाज में सुख विलुप्तप्राय हो गया। पुनः देश-काल-परिस्थिति बदली। व्यक्ति के जीवन में नैतिक मूल्यों का बहुत ह्रास हुआ। येन केन प्रकारेण स्वार्थ साधना ही सामाजिक धर्म बन गया। उसी के अनुरूप राजनीति बन गयी। वर्तमान समय में राजनीति समकालीन समाज में मनुष्यों द्वारा धारण किये जाने वाले धर्म के अनुरूप ही है। अतः राजनीति और धर्म अलग-अलग नहीं हो सकते। फिर इनके गठजोड़ के उचित-अनुचित होने का प्रश्न ही नहीं है।

– **विनय कुमार मिश्र**, बाजितपुर (वैशाली)

आचरण में हो धर्म, राजनीति में नहीं

सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि धर्म क्या है। धर्म आचरण का विषय है। राजनीति से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है। न तो धर्म को राजनीति पर आधारित होना चाहिए और न ही राजनीति धर्म आधारित होनी चाहिए। हाँ, शासन व्यवस्था अवश्य धर्मानुसार ही होनी चाहिए, परंतु यहाँ धर्म का आशय पंथ या संप्रदाय से नहीं, मानवता से है क्योंकि मानवता ही सबसे बड़ा धर्म है। धर्म व्यक्तिगत के साथ ही सामाजिक विषय भी है, पर राजनीति कदापि नहीं, राजनीतिक लाभ-अलाभ के लिए धर्म का प्रयोग अनैतिक ही नहीं, घातक भी है।

– **शुभकरण बैद**, लाडनूं

पंथनिरपेक्ष हो राजनीति

पृथ्वी के समस्त चर-अचर प्राणियों के अस्तित्व का जो चिंतन करे, वह धर्म है। धर्म मानव जीवन की आत्मा है। वहीं, समाज के ढांचे को बनाये रखने के लिए जिसकी आवश्यकता होती है, उसे राजनीति कहते हैं। हमारे देश में पौराणिक काल से लेकर जब तक नीति नियंता धर्म के अनुशासन को स्वीकार करके उस पर अमल करते रहे, भारत सुख-शांति-समृद्धि से परिपूर्ण सोने की चिड़िया बना रहा।

बीतते हुए समय के साथ धर्म ने राजनीति से मुँह फेर लिया, विरक्ति ले ली। राजनीति के शिखर पर बुरे लोग आ बैठे और पूरा मुल्क सदियों तक गुलामी के दंश झेलता रहा। धर्म आत्मा है, राजनीति शरीर, धर्म आकाश है और राजनीति जमीन। न हम आकाश के बिना रह सकते हैं न ही पृथ्वी के बिना अस्तित्व संभव है। इसलिए राजनीति धर्म सापेक्ष होनी ही चाहिए।

लेकिन धर्म का अर्थ हिंदू, मुसलमान, सिख, ईसाई, यहूदी, पारसी, जैन, बौद्ध से नहीं है। ये धर्म नहीं, पंथ मात्र हैं। अतः अनिवार्य रूप से राजनीति को पंथनिरपेक्ष होना चाहिए।

– **सुशील तिवारी**, बहराइच

आगामी परिचर्चा का विषय

सरकार का दायित्व और नागरिकों का कर्त्तव्य

भारत के नागरिक नयी सरकार चुनने की कवायद में जुटे हैं। राजनीतिक दल नये-नये ख्वाब दिखाकर शासक की गद्दी पर बैठने की जुगाड़ में उलझे हैं। 4 जून 2024 को जनता का फैसला सार्वजनिक हो जाएगा कि सत्ता की बागडोर उसने किसको सौंपी है!

सामान्यतः जनता को लगता है कि उसने मतदान कर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री कर ली है और जनता की इस मानसिकता के चलते शासन की बागडोर सम्भालने वाले राजनीतिक दल और नेता भी जनता से किये गये अपने वादों को विस्मृत कर देते हैं।

भारत जैसे विविधताओं से भरे विशाल लोकतांत्रिक देश के लिए क्या यह उचित है? कैसे सरकार अपने वादों के प्रति वचनबद्ध रहे? कैसे देश के नागरिक अपनी जवाबदेही के प्रति जागरूक रहें?

'अणुव्रत' पत्रिका के जुलाई 2024 अंक में प्रकाशित होने वाली परिचर्चा हेतु इन्हीं सब मुद्दों पर आमंत्रित हैं आपके विचार। रचनात्मक, प्रयोगधर्मी और अनुभवजन्य विचारों को प्रकाशन में प्राथमिकता दी जाएगी। अपने विचार अधिकतम 200 शब्दों में हमें 10 जून 2024 तक निम्न व्हाट्सएप नम्बर के माध्यम से भेजें।

9116634512

अणुव्रत की बात

मनोज त्रिवेदी

हमसे जुड़ने के लिए नीचे दिये गये चिह्न पर क्लिक करें

अणुव्रत समाचार

एलिवेट और डिजिटल डिटॉक्स पर सेमिनार

मुलुंड। प्रिन्स आफ मुंबई से अलंकृत सांस्कृतिक और धर्म नगरी मुलुंड में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में विद्यार्थियों के लिए 'एलिवेट : द रियल हाइट्स, डिजिटल डिटॉक्स और नो टू ड्रग्स' पर सेमिनार का आयोजन हुआ। महाकवि कालिदास नाट्य मंदिर सभागार में आयोजित सेमिनार में ग्यारह स्कूलों एवं कॉलेजों के लगभग एक हजार छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। अणुव्रत अनुशास्ता ने संदेश देते हुए कहा कि डिजिटल डिटॉक्स एवं नशामुक्ति से जीवन शांति से जीया जा सकता है।

अणुव्रत आंदोलन के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मनन कुमार, मुनिश्री अभिजीत कुमार, मुनिश्री गौरव कुमार और मुनिश्री जागृत कुमार ने विद्यार्थियों को आधुनिक खतरों से बचने की प्रेरणा दी तथा अध्यात्म योग से गौरवान्वित महसूस कराते हुए किसी भी नशे से बचे रहने का संकल्प करवाया।

'शांति एवं अहिंसक उपक्रम' पर 11वां अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

भारत सहित 14 देशों के 50 से अधिक विद्वानों के प्रभावी वक्तव्य

जयपुर। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी की ओर से 'शाति एवं अहिंसक उपक्रम' पर 11वां अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 13 से 16 फरवरी 2024 तक आयोजित किया गया। 13 फरवरी को अणुव्रत गीत से प्रारम्भ हुए इस ऑनलाइन अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी का उद्बोधन प्रसारित किया गया। उनके उद्बोधन का सार था – ''शांति और अशांति के बीज हमारे भीतर विद्यमान हैं। आवश्यक है आरम्भ से बच्चों को अहिंसा में संस्कारित किया जाये। जब तक व्यक्ति भीतर से शांत नहीं होगा, स्थायी शांति असंभव है।''

अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर ने सम्मेलन के विभिन्न सत्रों में सम्मिलित होने वाले विद्वानों एवं संभागियों का स्वागत किया और आशा जतायी कि हिंसा एवं घृणा के इस दौर में वक्तागण विश्व में शांति की स्थापना के लिए सार्थक सुझाव देंगे। आयोजन समिति के अध्यक्ष टी. के. जैन ने कहा कि सम्मेलन में भाग ले रहे विद्वानगण स्थायी शांति एवं वहनीयता के प्रभावी सूत्र खोजें।

उद्घाटन सत्र के मोडरेटर डॉ. सोहनलाल गांधी ने सत्र के वक्ताओं का संक्षिप्त परिचय देने के बाद सम्मेलन के विचारणीय विषय की अवधारणात्मक प्रस्तुति दी। संयुक्त राष्ट्र यूएनडीजीसी-सीएसयू के प्रतिनिधि फेलिपे कुइपो ने अपने प्रारम्भिक वक्तव्य में विश्व की वर्तमान स्थिति पर चिंता व्यक्त की।

अनपेक्षित कठिनाइयों और चुनौतियों के बावजूद यह अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आशा से अधिक सफल रहा। भारत सहित 14 देशों के 50 से अधिक विद्वान, शांतिकर्मी एवं

आध्यात्मिक नेताओं ने उद्घाटन सत्र सहित सात सत्रों में ज्ञानवर्धक व प्रज्ञापरक प्रस्तुतियां दीं जिनमें 18 भारत से थे। संयुक्त राष्ट्र संघ से दो प्रतिनिधि फेलिपे कुइपो तथा अम्बेसेडर अनवरूल के जुड़ने एवं उनके द्वारा वर्तमान दौर के संदर्भ में दिये गये महत्वपूर्ण वक्तव्यों ने इस सम्मेलन को गरिमा प्रदान की। यह इस बात का संकेत है कि दुनिया में अहिंसा समर्थकों एवं चिंतकों की कमी नहीं है। अणुव्रत आज भी बहुत ही प्रासंगिक अंतरराष्ट्रीय नैतिक अभियान है।

सम्मेलन के अंतरराष्ट्रीय संयोजक के दायित्व का सफलतापूर्वक निर्वहन डॉ. सोहनलाल गांधी ने किया। इसके लिए टी.के. जैन (दिल्ली) की अध्यक्षता में गठित केन्द्रीय समिति में जय बोहरा को एसोसिएट इंटरनेशनल कोऑर्डिनेटर नियुक्त किया गया। समिति के अन्य सदस्यों में शामिल थे संचय जैन (उदयपुर) एवं दीपक डागलिया (मुम्बई)।

अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर इस कोर कमेटी के पदेन अध्यक्ष और समग्र समावेशक थे। उनके दृढ़ संकल्प से ही यह आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हो सका। दीपक डागलिया ने अपनी व्यावसायिक व्यस्तताओं के बावजूद लॉजिस्टिक सपोर्ट दिया। टी. के. जैन तो हमेशा की तरह एक ड्राइविंग फोर्स थे ही। जय बोहरा की कर्मठता एवं समर्पण भाव प्रशंसनीय रहा। सम्मेलन को सफल बनाने में चैतन्य देव तथा किशोर कुमार जेठानन्दानी ने भी अपना दायित्व कुशलतापूर्वक निभाया।

'राजनीति का आकाश और अणुव्रत' विषयक सांसद संगोष्ठी

नयी दिल्ली। अणुव्रत अमृत महोत्सव वर्ष के उपलक्ष में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में अणुव्रत संसदीय मंच द्वारा पुराने संसद भवन में 8 फरवरी 2024 को 'राजनीति का आकाश और अणुव्रत' विषयक संगोष्ठी

का आयोजन हुआ। इस अवसर पर साध्वीश्री अणिमाश्री ने सांसदों का आह्वान किया कि जनप्रतिनिधियों की यह नैतिक जिम्मेदारी है कि वे स्वयं के साथ समाज में नैतिकता और चारित्रिक उन्नयन तथा नैतिकता को पुनर्जीवित करने का प्रयास करें तो बुराइयों, नैतिक ह्रास एवं पतन को रोका जा सकेगा। अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर ने स्वागत भाषण में अणुविभा के विभिन्न प्रकल्पों की जानकारी देने के साथ ही सांसदों से सक्रिय सहयोग की अपेक्षा जतायी।

केंद्रीय कानून, संसदीय कार्य और संस्कृति राज्यमंत्री एवं अणुव्रत संसदीय मंच के संयोजक अर्जुन राम मेघवाल ने अणुव्रत आचार संहिता की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। इंदौर के शंकरलाल लालवानी, जम्मू-कश्मीर के जुगल किशोर, वडोदरा की रंजना भट्ट, जयपुर के राम चरण बोहरा, सिरसा की सुनीता दुग्गल, मेरठ के राजेन्द्र अग्रवाल, कर्नाटक के लहर सिंह सिरोया, मेहसाणा की शांता बहन आदि सांसदों ने भी विचार रखे। आभार ज्ञापन अणुविभा के महामंत्री भीखम सुराणा ने किया। कार्यक्रम का संचालन अणुविभा की संगठन मंत्री डॉ. कुसुम लुनिया ने किया।

संगोष्ठी में केंद्रीय राज्यमंत्री प्रतिभा भौमिक, सांसद राहुल कस्वां, रतन सिंह, गीता बेन रतवा, मितेश भाई पटेल के साथ ही अणुविभा के ट्रस्टी तेजकरण जैन, सलाहकार कैलाशचंद्र जैन, उपाध्यक्ष राजेश सुराणा, तेरापंथ सभा

दिल्ली के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, अणुव्रत समिति दिल्ली के अध्यक्ष मनोज कुमार जैन, शांतिलाल पटावरी समेत अन्य गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे।

अणुव्रत चुनावशुद्धि अभियान

चुनाव में शुचिता के लिए देश भर में जन जागरण

अणुव्रत विश्व भारती के तत्त्वावधान में लोकसभा चुनाव के दौरान चुनाव शुद्धि अभियान चलाया जा रहा है। दक्षिण तमिलनाडु के कडलूर जिले के चुनाव आयोग की सहायक निदेशक अनंत नायगी ने श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जैन मन्दिर में विराजित मुनिश्री दीपकुमार के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया और वर्तमान में हो रहे लोकसभा चुनावों के बारे में उन्हें अवगति दी।

अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान के बैनर का अनावरण मुनिश्री उदित कुमार के सान्निध्य में 4 अप्रैल को असम के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया के हाथों उधना के तेरापंथ भवन में किया गया। इस अवसर पर अणुविभा के उपाध्यक्ष राजेश सुराणा, अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत के अध्यक्ष विमल लोढ़ा, मंत्री संजय बोथरा, चुनाव शुद्धि अभियान की संयोजक कल्पना बछावत व अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। किशनगंज अणुव्रत समिति द्वारा बाल मंदिर सीनियर सेकंडरी स्कूल में कार्यक्रम आयोजित किया

गया। चुनाव शुद्धि अभियान के राष्ट्रीय संयोजक राजकरण दफ्तरी, स्कूल के डायरेक्टर त्रिलोक चंद जैन, मैनेजमेंट कमेटी सदस्य मनीष दफ्तरी आदि ने विचार व्यक्त किये।

अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत के प्रतिनिधियों ने सूरत कलेक्टर व जिला चुनाव अधिकारी डॉ. सौरभ पारधी और अतिरिक्त चुनाव आधिकारी कमलेश राठौर से मुलाकात की। अधिकारियों ने एमओयू पर हस्ताक्षर करते हुए जिला प्रशासन के साथ मिलकर चुनाव शुद्धि व मतदाता जागरण का कार्य करने की स्वीकृति प्रदान की।

कोलकाता, हावड़ा, मैसूर, बेंगलुरु, गाजियाबाद, गंगाशहर, जसोल, सिलीगुड़ी, भीलवाड़ा, खारूपेटिया, राजसमंद, बारडोली, चेन्नई, मेलूसर, नोएडा, हनुमानगढ़, बीदासर, जयपुर, लाडनूं, दिवेर, चूरू, फरीदाबाद और अम्बिकापुर अणुव्रत समिति की ओर से भी कार्यक्रम आयोजित किये जाने के समाचार प्राप्त हुए हैं।

महाराष्ट्र स्तरीय अणुव्रत कार्यकर्ता संगोष्ठी

पुणे। अणुव्रत विश्व भारती के तत्त्वावधान में 1 अप्रैल 2024 को पुणे के वर्धमान सांस्कृतिक भवन में महाराष्ट्र स्तरीय अणुव्रत कार्यकर्ता कार्यशाला का आयोजन किया गया। डिजिटल डिटॉक्स अभियान के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री अभिजीतकुमार ने कार्यकर्ताओं को

संबोधित किया। मुनिश्री जागृत कुमार ने भी कार्यकर्ताओं का पथ दर्शन किया।

अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर ने अध्यक्षीय भाषण में कार्यकर्ता कैसा हो, उसे क्या करना चाहिए, किससे बचना चाहिए आदि विषयों पर विस्तार से चर्चा की। अणुविभा के सह मंत्री मनोज सिंघवी, संगठन मंत्री पायल चौरड़िया, महाराष्ट्र प्रभारी रमेश धोका, खानदेश प्रभारी पुष्पा कटारिया, डिजिटल डिटॉक्स के संयोजक प्यारचंद मेहता, प्रकाश भंडारी आदि ने भी विचार रखे।

कार्यशाला में जालना, बीड़, औरंगाबाद, मुंबई, लातूर, पिंपरी चिंचवड़ एवं पुणे अणुव्रत समिति के अध्यक्ष, मंत्री समेत करीब 50 प्रतिभागी शामिल हुए। जिज्ञासा समाधान सत्र में अणुविभा के राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने संभागियों की जिज्ञासा का समाधान किया। इससे पहले अणुव्रत समिति पुणे के अध्यक्ष धर्मेन्द्र चौरड़िया ने सभी का स्वागत किया।

अणुविभा मुख्यालय में बालोदय शिविर

राजसमन्द। अणुविभा में आयोजित तीन दिवसीय अणुव्रत बालोदय शिविर का समापन 3 मार्च को हुआ। समापन समारोह में अणुविभा के अध्यक्ष अविनाश नाहर ने बालोदय शिविर को बच्चों के जीवन में नये अनुभव तलाश करने वाला बताते हुए उनसे संवाद किया।

वहीं अणुव्रत अमृत महोत्सव के राष्ट्रीय संयोजक संचय जैन

ने शिक्षकों से यहाँ के सीखने-सिखाने के तरीकों को स्कूलों में भी लागू करने का आह्वान किया। अणुविभा के महामंत्री भीखम सुराणा ने अणुव्रत को विद्यालयी शिक्षा का अभिन्न अंग बनाने हेतु यहाँ के शैक्षिक प्रकल्पों से शिक्षा जगत को परिचित कराने की जरूरत बतायी। 'बच्चों का देश' पत्रिका के सह सम्पादक प्रकाश तातेड़ ने इस पत्रिका को संस्कार शिक्षण का प्रभावी स्रोत बताया।

अणुव्रत वाटिकाओं का लोकार्पण

मुम्बई अणुव्रत समिति द्वारा नेरुल क्षेत्र में स्थित आचार्य श्री तुलसी खेल मैदान में 'नारी गौरव उद्यान अणुव्रत वाटिका' का निर्माण किया गया। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने वाटिका के सामने स्थित चौक पर पधार कर महाप्रज्ञ चौक का अवलोकन किया।

भीलवाड़ा अणुव्रत समिति द्वारा तेरापंथ नगर स्थित उद्यान का नामकरण अणुव्रत वाटिका के रूप में किया गया। अणुव्रत समिति सदस्यों ने गुलाब के पौधे लगाये और पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया।

अम्बिकापुर अणुव्रत समिति की ओर से छत्तीसगढ़ विद्या निकेतन, सरहरी, ब्लॉक प्रतापपुर में अणुव्रत वाटिका का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर कई फलदार एवं फूलों के पौधों का रोपण करने के साथ ही इनकी देखभाल का संकल्प लिया गया।

जोधपुर अणुव्रत समिति द्वारा दूसरी अणुव्रत वाटिका का निर्माण शिवालय, माता का कुंड, गौर चौक, चांदपोल में उम्मीद फाउंडेशन के सहयोग से हुआ।

दिनहाटा अणुव्रत समिति द्वारा गोधूलि बाजार स्थित शेमरॉक फ्लोरेट स्कूल में अणुव्रत वाटिका का उद्घाटन समाजसेवी आनंद सेठी ने किया।

डाबड़ी अणुव्रत समिति की ओर से निर्मित अणुव्रत वाटिका का शुभारंभ मुनिश्री अमृत कुमार व मुनिश्री उपशम कुमार के द्वारा मंगलाचरण से हुआ।

गंगापुर, बज्जू और पीसांगन अणुव्रत मंच की ओर से भी अणुव्रत वाटिका का शुभारंभ गणमान्य लोगों की उपस्थिति में हुआ।

अणुव्रत विश्व भारती

की एक अभिनव पहल

अणुव्रत पत्रिका

ई-संस्करण

नि:शुल्क पत्रिका प्राप्त करने के लिए दिए गए व्हाट्सएप के चिह्न का स्पर्श कर अपना संदेश भेज सकते हैं।

पत्रिका नियमित भेजने के लिए आपका मोबाइल नंबर हमारी सूची में स्वचलित रूप से पंजीकृत हो जाएगा।

अणुव्रत आचार संहिता

- मैं किसी भी निरपराध प्राणी का संकल्पपूर्वक वध नहीं करूँगा। आत्म-हत्या नहीं करूँगा। भ्रूण-हत्या नहीं करूँगा।
- मैं आक्रमण नहीं करूँगा। आक्रामक नीति का समर्थन नहीं करूँगा। विश्व-शांति तथा निःशस्त्रीकरण के लिए प्रयत्न करूँगा।
- मैं हिंसात्मक एवं तोड़फोड़-मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूँगा।
- मैं मानवीय एकता में विश्वास करूँगा। जाति, रंग आदि के आधार पर किसी को ऊँच-नीच नहीं मानूँगा। अस्पृश्य नहीं मानूँगा।
- मैं धार्मिक सहिष्णुता रखूँगा। साम्प्रदायिक उत्तेजना नहीं फैलाऊँगा।
- मैं व्यवसाय और व्यवहार में प्रामाणिक रहूँगा। अपने लाभ के लिए दूसरों को हानि नहीं पहुँचाऊँगा। छलनापूर्ण व्यवहार नहीं करूँगा।
- मैं ब्रह्मचर्य की साधना और संग्रह की सीमा का निर्धारण करूँगा।
- मैं चुनाव के संबंध में अनैतिक आचरण नहीं करूँगा।
- मैं सामाजिक कुरूढ़ियों को प्रश्रय नहीं दूँगा।
- मैं व्यसनमुक्त जीवन जीऊँगा। मादक तथा नशीले पदार्थों - शराब, गांजा, चरस, हेरोइन, भांग, तंबाकू आदि का सेवन नहीं करूँगा।
- मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूँगा। हरे-भरे वृक्ष नहीं काटूँगा। पानी, बिजली आदि का अपव्यय नहीं करूँगा।

उपरोक्त संकल्पों में से सभी या अपने भावानुसार संकल्प लेने के लिए क्लिक करें..

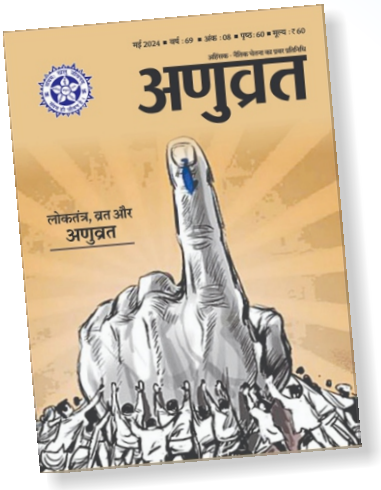

अणुव्रत अनुशास्ताओं के पावन प्रेरणा पाथेय, प्रसिद्ध साहित्यकारों की रचनाओं तथा प्रखर चिंतकों के आलेखों के साथ मासिक 'अणुव्रत' पत्रिका गत 69 वर्षों से अनवरत प्रकाशित हो रही है। 'अणुव्रत' पत्रिका का मुद्रित अंक मंगवाने के लिए आज ही सदस्य बनें।

सदस्यता शुल्क विवरण

वार्षिक	-	₹ 750
त्रैवर्षीय	-	₹ 1800
पंचवर्षीय	-	₹ 3000
दसवर्षीय	-	₹ 6000
योगक्षेमी	-	₹ 15000

बैंक विवरण :
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
कैनरा बैंक
A/C No. 0158101120312
IFSC : CNRB0000158

सदस्यता हेतु ऑनलाइन भुगतान के लिए इस QR कोड को स्कैन करें।

अणुव्रत आंदोलन की प्रतिनिधि संस्था अणुव्रत विश्व भारती के दो प्रकाशन 'अणुव्रत' व 'बच्चों का देश' के बारे में जानकारी के लिए वीडियो पर क्लिक करें :